International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 27-01-2019; Accepted: 28-02-2019
www.alleducationjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 80-82

छतरपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर समग्र मूल्यांकन का विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

कमलेश कुमार जड़िया[1], डॉ. जय सिंह[2]

[1] वरि. व्याख्याता (शिक्षा), शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत

[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

इस शोध पत्र के द्वारा छतरपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर समग्र मूल्यांकन का विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रुप में चयनित प्रति प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र एवं 10 छात्राएँ (प्राथमिक स्तर से कक्षा 4 एवं 5 तथा अपर प्राथमिक स्तर से कक्षा 7 एवं 8 के विद्यार्थी) कुल 1600 विद्यार्थियों का चयन का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। शोध क्षेत्र के शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में सार्थकता का औसत उपलब्धि 69.75 है तथा मानक विचलन 12.94 है। ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में सार्थकता का औसत उपलब्धि 62.75 है तथा मानक विचलन 13.13 है। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में सार्थक अन्तर है। क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

मूल शब्दः छतरपुर जिला, प्रारंभिक शिक्षा स्तर, समग्र मूल्यांकन, व्यवहारिक उपलब्धि

1. प्रस्तावना

किसी भी राष्ट् के चहुॅमुखी विकास के लिये शिक्षा का सर्वाधिक योगदान होता है। आदिकाल से लेकर आज तक शिक्षा के महत्व में कमी नहीं आई है। भारत में शिक्षा तत्व प्रणाली तथा संगठन का स्वभाव प्रायः वैदिक युग से माना जाता है। व्यापक अर्थ में शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु पूर्व तक कुछ न कुछ सीखता रहता है। सीखने से अनुभव की प्राप्ति होती है। सीखने के अनुभव से व्यक्ति के गुणों मे निखार ही नहीं वरन् उसके व्यवहारों में भी परिवर्तन आता है। व्यक्ति के व्यवहारों में आने वाले परिवर्तनों का ज्ञान सतत् मूल्यांकन प्रक्रिया द्वारा ही संभव है।

मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। मूल्यांकन न केवल शैक्षिक प्रक्रिया बल्कि जीवन की प्रत्येक प्रक्रिया का भी महत्वपूर्ण अंग है। जीवन के प्रत्येक समय एवं क्षेत्र में किसी न किसी रूप में मूल्यांकन सतत चलता रहता है। जिस तरह एक डाक्टर अपनी औषिधि की प्रभावशीलता का मूल्याकंन रोगी के स्वास्थ्य में सुधार हेतु प्रयासरत् रहता है, वैसे ही शिक्षक अपने प्रभावी शिक्षण का मूल्यांकन छात्रों के व्यवहार में हुये अपेक्षित परिवर्तन के आधार पर करता है। विद्यार्थी अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अनेक कदम उठाते हैं इन कदमों में से एक कदम शिक्षा है। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। विद्यार्थियों की उन्नति का प्रमुख आधार समग्र मूल्यांकन से ही संभव है। इसके बिना विद्यार्थी अपने उद्देश्यों/लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकता है।

शिक्षा का उद्देश्य मानव में अन्तर्निहित पूर्णता का प्रकाशन है। शिक्षा इंसान के व्यवहार, विचार व दृष्टिकोण में परिवर्तन लाता है। नई समाज व राष्ट्र एवं स्वयं उसके हित में होता है। वर्तमान में प्रत्येक क्षेत्र में हो रही उन्नति अथवा प्रगति में शिक्षा का योगदान सर्वोपरि है। यह राष्ट्र के नैतिक तथा मौलिक विकास के स्तर की आधारशिला है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य देश के लिए सुयोग्य नागरिक को तैयार करना है। चाहे वह किसी भी वर्ग, धर्म अथवा सम्प्रदाय से सम्बन्ध क्यों न रखता हो। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों एवं व्यवहारगत परिर्वतनों का परीक्षण समग्र मूल्यांकन के द्वारा ही हो पाता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल छतरपुर जिले वरन् सम्पूर्ण म.प्र. के छतरपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर समग्र मूल्यांकन का विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर समग्र मूल्यांकन का विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव व शासकीय प्रयासों व प्रभावों को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है।

3. शोध की परिकल्पनायें

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. "शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की पाठ्य सहगामी गतिविधियों से विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"
2. "शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में व्यक्तिगत गुणों की विकासात्मक गतिविधियों से विद्यार्थियों के व्यवहार एवं व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

4. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया हैः–

- पाठ्य सहगामी गतिविधियों में विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों का आकलन करना।

- प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर व्यक्तिगत गुणों की विकासात्मक गतिविधियों से विद्यार्थियों के व्यवहार एवं व्यक्तित्व में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन

5.1 भौगोलिक परिसीमनः प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला छतरपुर है। अतः जिला अन्तर्गत विकासखण्ड – ईशानगर, विजावर, बड़ामलहरा, बकस्वाहा, नौगांव, लवकुशनगर, बारीगढ़, राजनगर के प्रारंभिक स्तर के विद्यालय इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमनः अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, जिला अन्तर्गत स्थित प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर समग्र मूल्यांकन का विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन को इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

6. शोध विधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधिः प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 अवलोकन विधिः शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु छतरपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर समग्र मूल्यांकन का विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

6.3 सांख्यिकी विधिः प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

चूंकि छतरपुर जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए प्रत्येक विकासखण्ड से 10 विद्यालय कुल 80 विद्यालयों (40 प्राथमिक एवं 40 माध्यमिक) का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है। न्यादर्श के रुप में चयनित प्रति प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र एवं 10 छात्राएँ (प्राथमिक स्तर से कक्षा 4 एवं 5 तथा अपर प्राथमिक स्तर से कक्षा 7 एवं 8 के विद्यार्थी) कुल 1600 विद्यार्थियों का चयन का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर समग्र मूल्यांकन का विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – शर्मा, आर.ए. (1998)[1], राम, सुरेन्द्र, (2008)[2], यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006)[3], मिश्र भागवत प्रसाद (2004)[4] एवं पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[5]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

सागर संभाग अन्तर्गत छतरपुर जिला एक विशिष्ट राजस्व क्षेत्र जो कि 24°25'' से 80°15'' पूर्वी अक्षांश के मध्य 8 विकासखण्डों में विस्तारित है। छतरपुर जिला भारत के मध्यप्रदेश राज्य के 51 जिलो में से एक है। जिला प्रशासन का मुख्यालय छतरपुर शहर में स्थित है। यह जिला मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से पश्चिम की ओर 336 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस जिले में 6 अनुभाग (सब डिवीजन), 11 तहसील, 8 जनपद पंचायत, 3 नगरपालिका तथा 12 नगर परिषद् है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्रमांक – 01: "शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की पाठ्य सहगामी गतिविधियों से विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

सारणी 1: शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की पाठ्य सहगामी गतिविधियों से विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		शहरी	ग्रामीण
समूह की संख्या (N)		800	800
मध्यमान (M)		60.10	58.31
मानक विचलन (SD)		9.89	9.77
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		3.64	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

df = (800-1) + (800-1) = 799+799 =1598

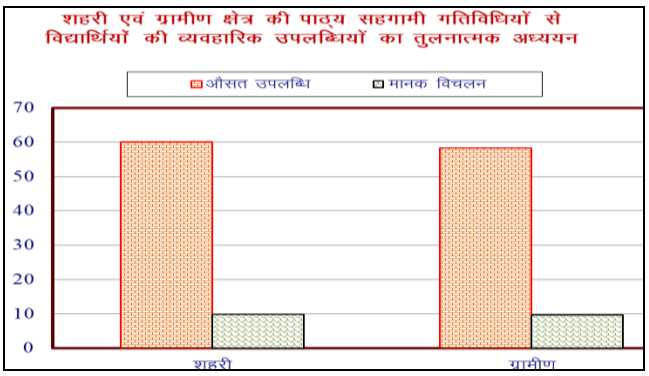

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में चयनित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की पाठ्य सहगामी गतिविधियों से विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र की पाठ्य सहगामी गतिविधियों से विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों में सार्थकता का औसत उपलब्धि 60.10 है तथा मानक विचलन 9.89 है। ग्रामीण क्षेत्र की पाठ्य सहगामी गतिविधियों से विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58.31 है तथा मानक विचलन 9.77 है।

1598 कि पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 है,

जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 3.64 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। अतः शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की पाठ्य सहगामी गतिविधियों से विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों में सार्थक अन्तर है।
अतः परिकल्पना क्र. 1 निरसित होती है।

परिकल्पना कमांक – 02 "शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में व्यक्तिगत गुणों की विकासात्मक गतिविधियों से विद्यार्थियों के व्यवहार एवं व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

सारणी 2: शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में व्यक्तिगत गुणों की विकासात्मक गतिविधियों से विद्यार्थियों के व्यवहार एवं व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		शहरी	ग्रामीण
समूह की संख्या (N)		800	800
मध्यमान (M)		58.49	57.38
मानक विचलन (SD)		9.85	9.66
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		2.28	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	

df = (800-1) + (800-1) = 799+799 =1598

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में व्यक्तिगत गुणों की विकासात्मक गतिविधियों से विद्यार्थियों के व्यवहार एवं व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में व्यक्तिगत गुणों की विकासात्मक गतिविधियों से विद्यार्थियों के व्यवहार एवं व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58.49 है तथा मानक विचलन 9.85 है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में व्यक्तिगत गुणों की विकासात्मक गतिविधियों से विद्यार्थियों के व्यवहार एवं व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 57.38 है तथा मानक विचलन 9.66 है।
1598 कि पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 2.28 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से मध्य है। अतः शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में व्यक्तिगत गुणों की विकासात्मक गतिविधियों से विद्यार्थियों के व्यवहार एवं व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नही है।
अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है

- शोध क्षेत्र के शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में सार्थकता का औसत उपलब्धि 69.75 है तथा मानक विचलन 12.94 है। ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में सार्थकता का औसत उपलब्धि 62.75 है तथा मानक विचलन 13.13 है। 158 कि पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 3. 40 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। अतः शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में सार्थक अन्तर है।
- शोध क्षेत्र में 90.42 प्रतिशत अभिमतदाताओं के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। 7.08 प्रतिशत मानते हैं, कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है, जबकि 2.50 प्रतिशत शिक्षकों को इसके सम्बंध में कोई जानकारी नहीं है।

संदर्भ सूचि

1. शर्मा, आर.ए. (1998), शिक्षा अनुसंधान, आर. लाल बुक डिपो मेरठ.
2. राम, सुरेन्द्र, (2008), प्राथमिक विद्यालयों में सामान्य, मूक–बधिर एवं दृष्टिहीन बच्चों के शैक्षिक अपव्यय संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध ग्रंथ, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।
3. यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006), वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के समाधान में प्राचीन भारतीय शैक्षिक परम्पराओं की प्रासंगिकता। भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी. ई.आर.टी., वर्ष–24, अंक–3 पृष्ठ–75–84।
4. मिश्र भागवत प्रसाद (2004), रीवा संभाग में बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा की प्रभावशीलता का समीक्षात्मक अध्ययन। अप्रकाशित शोध ग्रंथ, शिक्षा अ.प्र.सि.वि.वि. रीवा।
5. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007), भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार : दशा और दिशा, 'कुरूक्षेत्र, मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, वर्ष 53, अंक–11 पृष्ठ–7–9।